व बोत्सर्ग [illegible] तो पदि [illegible]
[illegible] त ने नंदी श्राद्ध [illegible]

२४३८ 1

अथ वृषोत्सर्गः॥

श्राद्ध विवेक ग्रंथसे अथ
वा प्रेत मंजरी वा ग्रन्थ से
श्राद्ध प्रकाश से करावणा

प्रेतमंजरीसे वृषोत्सर्ग करा
वणा वहुत ही सुगम रीति
"से है" अन्तु"

स्त्री शूद्र को अनुपनीत को वृषोत्सर्ग
कर ने का अधिकार नही है यह वाक्य श्रा
द्धविवेक मे लिखा है पत्र २०१८

विवेक

[illegible] वृषोत्सर्ग कर
तो नंदि भरव श्राद्ध नही करणा आदि

अथ वृषोत्सर्ग पद्धति॥ अथ
ब्राह्मण क्षत्रिय को तो १२ वें दि
न और वैश्यों को १६ वें दिन वृ
षोत्सर्ग करणा॥ प्रथम तो व
हि र्मैं खा दै॥ नदी के वा तडाग वा
देवालय पर जायकर के नेत्र॥
ग्रहों का मंडल वणावणा ग्र
हों का स्थापन दक्षिण ते रक
रणी फेर न व ग्रहों का पूज
न के रा कर के शय्या दान करा
वणा शय्या दान से पश्चात् वृ
षोत्सर्ग करणा तिस का है॥ वृषो

१ एक तांबे की रुद्र की मूर्ति बणा कर
के स्थापन कर के पूजन करणा॥१

स्थण्डल के पास आ चाते
की पूजा न माले की करली

त्सर्ग के वास्ते स्थण्डिल करणा
स पूजि का करणी मेलाकरण
कुशंडिकेरणी मेलाका वर
ण होता का करण करणापे
र कुशंडिकर के आहुतियं
देणी फेर चार व छ को ये १६
मवर्ड नी लरंग काता होते
वृत ही श्रो पर्दै न हो तो कैसे
ही रंग का तो सामग्री य के है
[illegible]॥ इत को आहुति दे
णी और पंजे ट लसर
ख १ एक रण के [illegible]

वस्त्र वृक्ष पर और [illegible]

स्तवर्ण पट्टि ॥ [illegible] वाछ्रेगरू
कालौनेका पत्र.

पर उस बर्तनौं और घंटा टीपौं
पंचों के गलमें बांधरणी ॥ और
पुष्पों की माला पांचों के गल में
बांधरणी ॥ और चारों बछडीयों
के मथ्थे पर कागज की मोडी ब
णा कर के उसमें डोडी के लगा क
र के बांधरणी ॥ और मोर का चंदा
मौड़ की जगह बछ के शिर पर
बांधणा ॥ फेर चारों बछडीयौं
के मध्य में बछे को खडा करणा
फेर रु अध्याय पढ कर के ॥ ॐ
नमस्ते रुद्र मन्यव उतम इसे
जल पढ कर के १ कलश जं
ल का भर देणा उसके और [illegible]

ताम्र का तेते तौ लोटे का ता पौ [illegible] व

केशरकुंजसे रुद्राध्यायका ६ मंत्र
का पाठकर जा फेर

मकेस्नानाय हैवोहिंघ इंगनतिजो
पासनखतेना फेर के मेकोर
को तुमवार कोउ ला य कर
के वेषकोग्रंकेन केरे प्रप
म दे हिनीत रफ कर्मकर्ता
[illegible] व के का चि.तु के
रदेवे फेरलामभाग मे वि
स्तू तकाचि रेकुर देश के
न तुम वार से प्रोक्तकर ण
कर स्नान पुजन करणाति
स्वाहे माडु विवके मप्रो रतो
क सीति मे पुहलोई प्रोक्तकर

[illegible]
[illegible]

~~वेसुने तो कलस हैं सो वध को~~
और वेद श्रीमें ~~वेद~~ फेर वीस
प्राधाप अरुप स्तक का पाठ करे
गा फेर वेष के हे छेण कर्ण
पे मंत्र पढना और यजमान को
दो मंत्र पढने मैंत्र पढ के एक
फेर कुशा तिप ती ले जल लेके
रके ~~[illegible]~~ उत्सर्गे
त करावे ~~फेर~~ ओं प्रद्यामे चान्त
द्वितीये है अमुक गोत्रस्य पित्
रमुक प्रेत स्य मो ख्वामोक्ष्ये
वेद पेट बेप बान पतिं वो होमि
तेन ओडतीभ्रस्य प्रियेणामन्नः
सापुत्रेण बास भगराम स्यामे शत्र

गोवाम दे मे हेतो र स्ये रोपिह

मंत्रके कर के इष्टगन दिशाके
विषैं वेष्ठ को प्रोम चारोवहु
औपको पांचोंको चलावे
चलाकर के खडीकर देना
फेर प्रधपाद्याचमनीय
गंध पुष्प धूप दीप से पूज
न पांचोंका करणा॥ से
पकरण वस्तती चतुष्टय सी
तापवच्छायनमः इदं मन
तोपनमु॥ इस प्रकार पूजन क
रणा॥ फेर वर्ष डीबों के मध्यमे
कलश को ऽस्मिन् मंत्र जाके॥

[illegible] मंत्रसे॥ फेर प्र
प [illegible]

ष्रु प्रे घुडा पंकड्कर कत पुणे
करणातीन २ प्रेजलो पेरण्यो
लगी
फर औ २ प्रगनेभ रुवनकरा
है उसके धोरे धोरे फेर पीछे
णे इसप्रकार चारो वंधुडी
पेंको २ प्रगाडीकर [illegible] वाम
को पीछे कर इसप्रकारसे
तीन परिकमा जवहोतेवे
तव फेर वपको २ प्रगाडीक
रे द्योर व धुडी पेंको पिछेप
रके परिक्रमा चारुर्थी करणी
ये ऊलके फेर वर को न्यो
छीतर कर सोवर ये फेर मी

पैनावार को [illegible]
कव.।एकवार से भंकित करके

[illegible]

यह सभ लोकाचार देशाचार
रीति सो लिखे हैं फेरकौं का करणा
चोडी बांधणा मोर के ... देका मोड
बांधणा यह सभ रीति लौकिक
है सो करा देणा आद विवेक
अंग्रम सो और अंत्येष्टि श्राद्ध
प्रकाश प्रेतमें जो है इस ग्रंथों
मे यह कहीं नहीं लिखा है ॥
अहां तो इह लौत के जो यत्न
तौ के न सो स्वर्ग ए यहीतो
किना रीति पद्म नभ्म ने करा

है ... पीछौ तरह से करके
[illegible]

। अब वे जो श्राद्धविवेकादि ग्रंथों मे जो
वृषोत्सर्ग लिखा है सो लिखते है
। प्रेतमंजरी मे जो पद्धति: पत्र
२४ पर लिखि है। और श्राद्धवि
वेक मे पत्र ३६ पर लिखी है सो
क्रम संक्षेप रीति से यथायोग्य
शास्त्रानुसार लिखते है। अथ
मतः गणेश पूजन कलश पूजन
करणा। फेर एक मूर्ती ताम्र की रु
द्र की वरुण करके पूजन करके एक
हाथ माप वाला कुंभ जल का भर
के उसके ऊपर मूर्ति स्थापन क
रदे। फेर स्थंडिल करणा स्थंडि
ल के समीप चावलों की पु भात
का चरु बनाकर [illegible]

फेर ग्राम्निका पंचमूसंस्कार
करकेकुण्डोकेरकप्रज्वलहोता
कावरणकरकेफेरग्राहूती॥
दशोफेरसू प्रा ध्यायनाव६ केवां
केमंत्रपठकरकेपश्चात ग्राचार्य
वध केदक्षिणपार्श्वमेचक्रका
ग्रौरवामपार्श्वमेत्रिशूलका
चित्रकुंकुमकेशारसेवाकु
उसेकरेफेरहिरण्यवर्णा ग्रौर
शान्नोदेवी इतमंत्रसेस्नानकरा॥
वेफेर घंटा वस्त्र माला सूत्र लीपद्य
यहसभ चारोवर्कडीमेक ग्रौरके
मकपहरा के फेर गंध दुग्धहर
पीलमैगचेसरा ... राखा
पांचोंका फेर वधकेदक्षिणाके

रामे से होमं मंत्र पढे फेर वधू पक्ष का मुख
उत्तर [redacted] की तरफ करवे, वधू
को पृष्ठ पकड कर को [redacted] उसर्जन करे ॥
संकल्प कह कर के ॥ फेर वधू को
वधू ड्यौढी का ईशान की तरफ
को बुलावे फेर अभिमंत्रण
करे फेर अपसव्य होकर
के वधू को पृष्ठ पकड करके
तर्पण करे तीन वार अंजली
डारे फेर ब्राह्मणों को बुलाय
कर के प्रतिष्ठा कर फेर पापस
खीर से भोजन करा देवे फेर व

घडी पीछे व वधू को छोड देवे ॥

यह विधि है या वछड़ी वोको महा
ब्राम्हण को दे देनी वाकि पै वस्त्र
को छोड़ देनो ॥ फेर षोडश श्रा
द्ध करावनो फेर श्राद्ध श्रा
ऊ नते सान्नो दक कुंभ दान
क पितृ धानं कृ ॥ वा षोडश श्रा
द्ध ते सान्नो दक कुंभ दान कै
पितृ धानं चैकाधिकं ॥ तार्त स
पिण्डं काप्यं ॥ शास्त्र समान
तो षोड़सजै की विधि यहि है
और लौकिक रीति यह है के
एक दो [illegible]

कै फेर वो है जौ हवन को श्र

८

पिहै उसके चोर चोर को
वछुडा या को तो अगाडी के
रदेवे और वछ को पीछे
करके तीन परिक्रमा क
रवा देवे फेर वछ को अ
गाडी करे और वछडी या
को पीछे करके चतुर्थ परिक्र
मा करा वी जो वछडी होवे
बांधकर और का वंदा छोड़ वछ
क बांध कार के फेर कर वरके
चाकी तरह से फेर छोड़ देणा
यह रीति हो कि कवी करदेणी
चाहिये ॥

प्रथम मगे दिकूजान फेर प्र
प्पादान फेर वैषोत्स
र्ग फेर षोडश श्राद्ध सपिं
डी इसतरह से करणा
लिखा है। जो तीन षोड
स करणे होतो इसत
रह से करणे। एकाद
शावें ११ दिन सपाद लीदो
वा साठेवासर ६२॥ वा ३१। स
हि करै तो ग्यारवें दिन से करे
फेर १५वें दिन [illegible]

कर देणी षोडशावें दिन षोडशा

वृषोत्सर्ग सपिंडि पह सभ
कृत्य करादेणा॥ जो पहुकवीन
ही करते तो षोडशवें दिन ब्रा
ह्मणों के पास ते १० सेह
स्त्र जप करा कर के नाराय
ण बलि करादेणी फेर शय्या
दान करके वृषोत्सर्ग करादे
णा फेर षोडश सपिण्डि के
रादेणी फेर बारा भरवादे
णा शय्या बाहर की का संकल्प
नवग्रह पूजन करा करके संक
ल्प करादेणा फेर ७ वें दिन प्रे
तागी करा करके ब्राह्मण भोजन
करादेणा एक वैष्णो के वास्ते का

णा ब्राह्मणों के १२ वें दिन करणा मत
म॥

...भोग ... रखे ...के
कर्मो स्वर्ग की सामग्री यह है।
बच्चे चार वछड़ीयाँ ॥ स्व
र्ण के पटे ५ और ५ थालि
यों और ५ पुष्प माला और
१ एक एक गज दुशाल सब
पांत्रों के उपर डाव नी इस
वास्ते ५ गज दुशाल लेणा ॥
चेर पावसेर केसर और
पावसेर घृत और पुंजी
खीर की करणी ॥ केशरक
र्पूर सतावर ॥ इन पत्रों पर
...
लश ...

रोड़की जगे खबका

पहसामग्रीहै।जोमंद
तकके प्रशंचा नके
उपर करतेतोकेल यही
सामग्री है जो कार्ति
के मे प्रपपो पितरो
के निमित केरावरणा
होतो वह भी लग जसो तो
कार्तिक मेही होताहै।
उसका विधान औरसामग्री यह है।

10

नमोगुरुभ्यः

प्रयाग तो पथ शाकि

श्रील गौ से वृ मि

गायत्री का जप

केनवयण पृश

श्रद्धेन केशव

णानफेरव बोल

नेकेरण साप्रनी

१५सपरी कोजबु

पुकेसारे सतावर ॥

चरख छोते रेता कश्या

और सामग्री बुद्धि से के
र लेनी ॥ धर्मसिंधु में लि
खा है के मोक्ष से जो एकादशी
कि कर्तव्यं वा ॥ अयं द्वादशाहे
पृतक: ॥ केचिद् प्राच्ये संवत्स
र पर्यन्त कर दे इस यह कहते
है सम्वत्सर पर्यन्त बत्सोत्स
र्ग करके तो मे नांदी मुखश्रा
द्ध नहीं करना ॥ जो उपर तक
र तो नांदी मुख करना ॥ विचार
पत्र ते करि नचकृष्ण नवाह प
नषट्पंचवितांधेनं नचकृष्णान्
बंधयेत् ॥ १ ॥ इह धर्मसिंधु में लि

खा है ॥

अशौचान्द्वितीयपदिनजोव्यासंगोकरे तोनां
दीमुख श्राद्ध नहीं करना कोई महूर्त नही
देखना ओ फेर करे तब महूर्त वी देखना
नांदी श्राद्ध भी करना लिखा है श्राद्ध वि
वेक में पत्र १० पर यह सब वाक्य लिखे
है॥

12

13

14

15

16

वके थो सर्ग कार्ति क म्रेक रे
स्नाक्षि-स्रु एति प्रा वा-चे नी प्र

रणि प्रा को करे तो नं दी प्रख
को उ प्रप्प म करके फेर वे बो
जि ज कर णा॥ जो श्राड पो स
पिं डि पर ग्र श्ने वा. ता द्वि ती
य दिन करे तो नं दी प्रख
न्हीं कर णा.

17